



कहानी

अशोक जैन

सवि और स्व - दो नाम मेरे लिए परिचित हैं। इनकी कहानी को कितनी ही बार कागजों पर उतारना चाहा, हर बार कुछ पृष्ठ काले करके अधूरी ही छोड़ दी। 'स्व' के आंसुओं में भीगी और 'सवि' की मधुर खिलखिलाहट में डूबी इस व्यथा कथा को आज लिखने की कोशिश कर रहा हूँ।

मेरे सामने अभी भी दोनों के पत्र खुले पड़े हैं। हवा के एक झोंके ने उन्हें सर से उड़ा दिया। 'सवि' का पत्र छिटक कर दूर जा गया। 'स्व' का पत्र अभी भी वहीं पड़ा है --मुस्करा दिया मैं - स्व और सवि और विधि का व्यंया। बहुत चाहा दोनों को मिलाना- लेकिन दोनों चली गई स्नेह की छाया और आँखों में शिकायत लिए। बचपन में मैंने फूल के दो पौधे लगाए थे। दोनों पास ही खड़ी थी। मैंने सरल भाव से पौधों को इंगित करते हुए कहा था- यह स्व और वह सवि। हंस दी थी दोनों। वसंत आया, फूल के दोनों पौधे बढ़ते गए और फिर पतझड़ के क्रूर शिकंजे ने अपना जौहर दिखा दिया। सवि के पौधे पर कलियां खिलीं पर स्व के पौधे पर कभी बहार न आई और न ही फूल खिले। मुझे चोट पहुंचती। मैं विचलित हो उठता और खाली समय में दोनों पौधों को सींचता, सहलाता पर स्व के उदास पौधे को जिला नहीं सका। दिन गुजरते गए - दोनों के स्वभाव में काफी अंतर था। एक शांत और गंभीर, दूसरी चंचल पर मुझे दोनों प्रिय थीं।

स्व' मेरे खामोश जीवन का सहारा थी, मेरी गंभीर प्रवृत्ति और मेरे लेखन की प्रेरणा। 'सवि' मेरे जीवन का लावण्य, मेरी मुस्कराहट। दोनों को मुझसे प्रेम था पर उनके स्नेह में भी अंतर था। 'स्व' के स्नेह में शीतलता और 'सवि' तो थी ही उष्णता। मैं अनुजाने में ही शायद 'स्व' की ओर अधिक ध्यान दिया करता। मुझे मालूम था कि उसे सहारा चाहिए, किसी के स्नेह का आवरण चाहिए। नहीं तो वह मिट जाएगी। और फिर वह इस बात से भी अनभिज्ञ नहीं थी कि मैं उसका भाई नहीं हूँ। यही कारण था कि शायद अनजाने में ही मौसी की उस अनाथ लड़की के प्रति मुझे अपार स्नेह हो गया था। 'सवि' अपनी मृगनयनी आंखों में आंसू भर कर कहती- 'भैया। तुम स्व को मुझसे अधिक चाहते हो।' मैं डांट देता। और सवि रोती हुई मां के पास चली जाती। मां के डांटने से पहले ही हम दोनों रफूचक्कर हो जाते थे। दिन- माह - वर्ष आए और चले गए। 'स्व' को कला से प्रेम था और 'सवि' को संगीत से। 'सवि' ने संगीत में एम ए किया और 'स्व' ने आर्ट में पंचवर्षीय कोर्स। मैंने एमबीबीएस किया और डाक्टर बन गया। 'स्व' की प्रेरणा का ही परिणाम था यह। हमेशा कहा करती थी 'आप डाक्टर बनो। कितनी प्रसन्नता होगी मुझे जिस दिन सैकड़ों पीड़ितों के प्राण बचा सकोगे।' मैं तब गर्व से कहूंगी - ये मेरे भैया हैं।' मैं हंस देता। स्नेह से उसके बालों

अनबूझा प्रश्न 'स्व' और 'सवि'



सवि ने आज भी पत्र में वही उलाहना दिया है - ‘भैया। मेरी परवाह क्यों करने लगे आप! स्व जो है’। स्व और सवि के रास्ते अलग-अलग हैं, लेकिन एक भाई की अपनी बहन के लिए तमन्ना यही होती है कि वह खुश रहे। लेकिन आज भी वह प्रश्न अनबूझा ही है कि दोनों में मुझे कौन अधिक प्रिय है। स्व के बिना सवि की हंसी हंसी नहीं लगती और सवि के बिना स्व की सिसकियों में दुख का आभास नहीं होता।

को थपकी देकर कहता- जा सो जा। या रातभर भैया के सिरहाने बैठी रहेंगी। 'ऐसा मेरा सौभाग्य कहां!' 'स्व' मुस्कुराने का असफल प्रयास करती। उस मुसकुराहट में विषाद की रेखा होती। इसके कारण से मैं अनभिज्ञ नहीं था। बचपन में ही 'स्व' के माता पिता की कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी और मां अपनी बहन की उस बच्ची को अपने पास ले आई थी। परन्तु 'व' जैसे जैसे बड़ी होती गई, मां उससे खिंचती चली गई। 'सवि' का बचपना करना सभी को अखरता। मासूम 'स्व' पर उसका गुस्सा उतरता। मैं कुछ भी करने का साहस नहीं जुटा पाता। मां के व्यंग बाण और सवि

की खिलखिलाहट उसे वेदना पहुंचाते। जब कभी भी अत्यंत दुखी हो जाती तो मेरे कमरे में आकर रोने लगती। मैं उसे सांत्वना देता।

'मेरी नन्हीं दीदी, रोती क्यों है?' वह रोती रहती। फिर सिसकियां धीरे-धीरे कम होने लगती। 'स्व' मां के साथ पर का सारा काम काज करवाती पर इसका श्रेय उसे कभी नहीं मिलता। एक दिन उसे बुखार था। काम नहीं कर पाई तो मां ने आंगन में खड़े हो कर कहा था- 'तो क्या मेरी फूल सी' 'सवि' काम करें।' 'मां' मैं चौख उठा था। 'यह कैसा अन्याय है। कुछ तो सोचो। वो भी तुम्हारी बेटी की तरह है।'

'जो शिक्षा प्रणाली लड़के- लड़कियों को सामाजिक बुराई या अन्याय के खिलाफ लड़ना नहीं सिखाती तो उस शिक्षा में जरूर कोई न कोई बुनियादी खराबी है'

-मुंशी प्रेमचंद



‘बेटी तो नहीं है न।’ मां ने और ऊंचे स्वर में कहा था। कुछ वर्ष और-- 'स्व' ने 21 वां और 'सवि' ने 20वां वर्ष पूरा किया। मां को 'सवि' के विवाह की चिंता हुई तब धीरे से मैंने कहा था 'मां। स्व बड़ी है। पहले उसकी शादी तो होने दो।' मां नाराज हो गई थी र सारा दिन 'स्व'-- 'स्व' ! जाने क्या जादू कर दिया है इस लड़की ने? 'पर जब मां शांत हुई उन्होंने मुझे बुलाकर कहा-'शरद। श्रीमती केशव का पत्र आया है। लिखा है कि उसका भाई रमन इंजीनियरिंग करके लौटा है। अपनी 'सवि' को देखने आ रहे हैंरमैंने सब सुना समझा। 'ह रहकर' स्व' की आंखों में तैरता एक अनबूझा प्रश्नचिह्न मुझे व्यथित करने लगाता- भैया मेरा अपराध क्या है!! कुछ दिन बाद मां के कहने पर मैं श्रीमती केशव और रमन को लेने स्टेशन गया था। लौटने पर जब काल बैल के बजने पर 'स्व' को द्वार पर खड़े पाया तो चौंक गया। मां की सख्त हिदायत के बावजूद 'स्व' यहां कैसे! फिर ख्याल आया कि हम समय से पहले आ गये थे।

मैं रमन की ओर मुड़ा। सुन्दर चेहरे पर प्रशंसनीय भाव थे। 'स्व' को जब वस्तुस्थिति का भान हुआ तो संकोच से आंखें नीची कर के भाग गई।

मिसेज केशव ने पूछा 'यही।' 'जी हां। यही मेरी बहन है --'बहुत बड़े सत्य को झुठला दिया था मैंने। तभी मां का तमतमाया चेहरा मेरे जहन में उभरा। मां को जब सत्य का पता चला तो मेरे सामने ही हाथ से कांच की प्लेट जमीन पर दे मारी। कांच का एक टुकड़ा छिटक कर मेरे माथे पर आ लगा। घाव तो समय रहते भर गया पर निशान आज भी मौजूद है।

'सवि' को देखकर भी रमन ने 'स्व' को पसंद किया। मां 'स्व' और रमन की शादी में सम्मिलित नहीं हुई। 'स्व' की विदाई के समय रमन के कंधे पर हाथ रखकर मैंने कहा था -'रमन बाबू! 'स्व' मेरी बहन से बढ़कर है, उसे ...'

रमन मुस्करा दिया-'आपके स्नेह की थाह उसी दिन देख ली थी जब द्वार पर खड़ी 'स्व' को आपने अपनी बहन कहा था।' कुछ माह पश्चात 'सवि' भी चली गई। मां बहुत चाहने पर भी मुझसे नाराज नहीं रह पाई। आज सोचता हूं मैंने वही किया जो मेरा कर्तव्य था। 'सवि' ने आज भी पत्र में वही उलाहना दिया है - 'भैया। मेरी परवाह क्यों करने लगे आप! 'स्व' जो है'।

'स्व' और 'सवि' के रास्ते अलग-अलग हैं, लेकिन एक भाई की अपनी बहन के लिए तमन्ना यही होती है कि वह खुश रहे। लेकिन आज भी वह प्रश्न अनबुझा ही है कि दोनों में मुझे कौन अधिक प्रिय है। 'स्व' के बिना 'सवि' की हंसी हंसी नहीं लगती और 'सवि' के बिना 'स्व' की सिसकियों में दुख का आभास नहीं होता।

कवि कॉर्नर

गजल

आशा खत्री लता



नकली जिनकी मुस्कानें हैं

नकली जिनकी मुस्कानें हैं उनके वर्क उतर जाने हैं।

दीप दिखाये जो सूरज को उनके सव भी खुल जाने हैं।

गीत गजल औ कथा कहानी सभी पीर की संतानें हैं।

पीड़ा व्यथा दर्द जख्म सब आँसू में ही ढल जाने हैं।

जिनसे गीत उपजता मगरुह वो दिल कितने वीराने हैं।

रोज नयी पीड़ा है दिल में रोज नये ही अफसाने हैं।

कविता

जय प्रकाश पंडेय



सुख का साम्राज्य

कमी चलती है मरत मलय गुनगुनाती मुस्कराती उपनव के एक कोने से दूसरे कोने तक झूमती है डालें खिलते है फूल चहचहाते पक्षी उछलते कुदते जीव जंतु सुख का साम्राज्य कमी रुक जाती वही हवा बेरुखी बदहाल सबका बुरा हाल अस्त व्यस्त सब क्या ही करे अब बेहाल परेशान गुरुझो फूल फांफने पड़े धूल सब रुक गया सा कुछ लुट गया सा सब कुछ तो वही है पवन ही न बही है चलो दूंदते है पवन में उसको उसको पवन में सुकुन वह पहले भी न था अब भी गायब है सब अहसासों में ॥

सोशल मीडिया में गालियों का सुपर मार्केट



व्यंग्य

रेखा शाह आरबी

सच बता रहे हैं चतुरी जी गाली अक्षर का 'ग' भी नहीं जानते थे। वह उतने ही भोले-भाले थे जितना किसी कविता में एक नवजात शिशु रहता है। जो अल्ले-ले-ले की भाषा के अलावा कुछ समझता ही नहीं है। वह तो किसी वेद, पुराण, भाषा विज्ञान को नहीं समझता है। फिर गालियों की तो बात ही क्या करनी है। चतुरी जी तो ऐसे थे कि यदि कोई कमी-कमार उनके जानने वाला गाली दे दे, तो वह चार लोगों से उसका अर्थ भावार्थ पूछते हुए चलते थे। तब जाकर उनकी समझ में आता था कि आखिर उस व्यक्ति ने उन्हें कहा क्या है। यह दुनिया तो लोगड़ी के जैसे है। पर चतुरी जी मासूम पांडा जैसे जीव थे। ऐसे जिसे उसी का मन मासूमियत से मोह ले।

उनकी मासूमियत तो म्युजियम में रखने लायक चीज थी अर्थात बहुत कोमती - दुर्लभ थी। पर हाय रे यह दुनिया और हाय रे दुनिया वाले, अनमोल चीजों की कवर करना जानते ही नहीं है। रोज उनकी मासूमियत को नीलाम करना चाहते हैं। उनकी भी अपने के जैसे रंग में ढालने का इंतजाम कर लिए। अब बताते हैं कि कैसे करना चाहते हैं। चतुरी जी ने दुनिया से जो सीखा, वह तो खैर सीखा ही, लेकिन इतना नहीं सीखा, जितना सोशल मीडिया ने उनको सिखा दिया। और उतना सीखना भी नहीं चाहिए था। एक दिन सोशल मीडिया पर अपना अकाउंट बना लिया। मजे के लिए बनाया

देश की सारी मिसाइल में उतनी आग नहीं रहती है, जितनी उनकी गालियों में रहती है। सुनने वाला सुनकर ही मर जाए। मुंह से जहर ऐसे निकलते हैं जैसे अमृत निकालते हैं। कुछ लोग तो इस कुक्कुर झौंवा के परमानेंट सदस्य होते हैं। जो रोज पहली फुरसत से पंचायत लगाते हैं। उसके बाद उस पर कुक्कुर झौंवा करने सोशल मीडिया पर बैठते हैं।

गया अकाउंट एक तरह से उनके कोचिंग क्लास में ही बदल गया। इसके सिलेबस एकदम फिक्स थे। टीचर हद दर्जे के काइयां थे। पर पूरे अव्वल दर्जे के अपने विषय के ज्ञाता थे। मजाल कि कोई उनसे जीत जाये। अब चतुरी जी कोई भगवान थोड़े ना थे। वह भी इंसान थे, उनके अंदर भी जज्बात और भावनाएं थी, तो उनके ऊपर भी प्रभाव पड़ना लाजमी था। वह कहा जाता है 'जेसी संगति वैसे विचार' हो जाते हैं, सही ही कहा गया है।

अब तो आप सब जानते ही हैं। सोशल मीडिया में रोज किसी न किसी के बीच में

कुक्कुर झौंवा मचा रहता है। सोशल मीडिया में रोज तो किसी न किसी के बीच में कुश्ती होती ही रहती है। कुश्ती के बीच में एक-दूसरे पर मौकने के चक्कर में खूब भौ-भौ तो करते ही हैं। कुछ कौवे के जैसे कांव-कांव करते हैं। कुछ यहां पर शेर के जैसे गरजते हैं, तो कुछ लकड़बक्का टाढ़प के भी हैं। बातों की लारें और गालियों की मिसाइल बरसाते हैं।

देश की सारी मिसाइल में उतनी आग नहीं रहती है, जितनी उनकी गालियों में रहती है। सुनने वाला सुनकर ही मर जाए। मुंह से जहर ऐसे निकलते हैं जैसे अमृत

निकालते हैं। कुछ लोग तो इस कुक्कुर झौंवा के परमानेंट सदस्य होते हैं। जो रोज पहली फुरसत से पंचायत लगाते हैं। उसके बाद उस पर कुक्कुर झौंवा करने सोशल मीडिया पर बैठते हैं।

कुछ लोग टैंपरेरी होते हैं। जब खाली समय रहता तो देखने के लिए चले आते हैं और कुछ दर्शक भी होते तो चतुरी जी भी दर्शक हैं। वह कहावत तो आपने सुनी ही होगी कि देखते देखते इंसान मूर्ख से होशियार बन जाता है। वैसे ही चतुरी जी इस कुक्कुर झौंवा के बीच में गालियां सुनते-सुनते गालियों के एक्सपर्ट बन चुके हैं। अपना सोशल मीडिया तो गालियों का सुपर मार्केट है।

आपकी किस किस्म की गाली चाहिए, बस आपकी डिमांड के अनुसार यहां पर सभी गालियां चलती हैं। एकदम नए-नए बांड की गालियां सोशल मीडिया पर ही सुजन पाती हैं। पुरानी से लेकर नई सभी गालियां यहां पर आपको थोक के भाव में मिलती हैं। चतुरी जी तो पक्के हो गए हैं। जिसकी भी गाली नहीं आती है, वह इस सुपर मार्केट में आकर अपने मनपसंद की गाली लेकर खरीदना भी नहीं है। वैसे ही मुफ्त में सीख सकते हैं। यही इस मार्केट की सबसे बड़ी खूबी है।

लघु कथा

कुशल प्रबंधन

सीमा और नेहा अपनी-अपनी बालकनी में खड़ी होकर बातें कर रही थीं। तभी सीमा की नजर गली से गुजरती गृहकार्य सहायिका गीता पर पड़ी। वह सीमा और नेहा के अतिरिक्त अड़ोस पड़ोस के कुछ ओर भी घरों में काम करती थी। सीमा ने उसकी पहनी हुई साड़ी की तरफ इशारा करते हुए नेहा से कहा 'यह साड़ी तुम्हारी है ना ?' हां, मैंने इसे पांच-सात बार पहन लिया था। वैसे अच्छी साड़ी है, इसके खूब चलेगो।' नेहा ने कहा। 'यह सबकी दी हुई साड़ियां तो पहन लेती है पर पता नहीं मेरी दी हुई साड़ियां क्यों नहीं पहनती जबकि मैं इसे हमेशा नई साड़ी ही देती हूँ।' सीमा ने मायूसी भरे स्वर में कहा, 'मैंने कई बार टोका भी पर यह कहती है कि मेरी साड़ियां नई होती हैं इसलिए आने-जाने में पहनती है काम में नहीं, पर कमी तो मेरे सामने भी पहनकर आए।'



सरोज माहेश्वरी

कहानीकार

इसलिए मैं गीता को एकदम नई साड़ी नहीं देती।' सीमा ने भी सोच लिया था कि वह कल गीता से इस बारे में बात करेगी। अगले दिन जब गीता आई तो सीमा ने साफ-साफ शब्दों में पूछ लिया कि क्या वह उसकी दी हुई साड़ियां बाजार में बेच देती है?

गीता इस अप्रत्याशित प्रश्न से एकदम सकपका गई। 'क्या कह रही हो दीदी, मैं ऐसा क्यों करूंगी ? आप जानना चाहती हैं ना कि मैं आपकी दी हुई साड़ियां क्यों नहीं पहनती। दरअसल बात यह है कि मेरी दो ननंदें और एक छोटी बहन हैं। मुझे उन लोगों को भी उपहार स्वरूप साड़ियां देनी होती हैं इसलिए मैं खुद को मिलने वाली सभी नई साड़ियां रख लेती हूँ और वे जब भी मेरे पास मिलने आती हैं तो उन्हें भेंट स्वरूप वही साड़ियां दे देती हूँ।' मेरे पहनने के लिए तो मुझे पुरानी साड़ियां मिल ही जाती हैं। अब मैं नई साड़ी पहनूँ और फिर उनके लिए बाजार से खरीद कर लाऊँ तो मेरा बजट बिगड़ जाएगा ना।

गीता के इस जवाब ने सीमा के सारे संशय धो डाले। सीमा ने गीता के कुशल गृह प्रबंधन के साथ रिश्तेदारी निमाने के तरीके की सराहना की। अब उसे गीता से कोई शिकायत नहीं थी।

हरिभूमि

रोहतक, सोमवार, 7 सितंबर 2026

10

पुस्तक समीक्षा

बहुआयामी व्यक्तित्व का शब्द

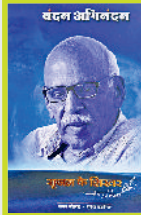
चित्र है 'सृजन के शिखर'



समीक्षक

डा. मधुकान्त

डॉ. चंद्र त्रिखा के जीवन और व्यक्तित्व पर आधारित कृति 'सृजन के शिखर' केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि एक ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व का शब्द-चित्र है जिसने साहित्य, पत्रकारिता और समाज सेवा के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ी है। माधव कौशिक और सुमेधा कटारिया द्वारा संपादित यह ग्रंथ डॉ. त्रिखा के प्रति विभिन्न लब्ध प्रतिष्ठित रचनाकारों, प्रशासनिक अधिकारियों और उनके करीबियों के श्रद्धा-सुमन का संकलन है। पुस्तक की शुरुआत डॉ. त्रिखा के सेवानिवृत्त स्वरूप से होती है। जस्टिस अमरजोत भट्टी के शब्दों में, डॉ. त्रिखा ने मानवता को केन्द्र में रखकर सेवा को अपना धर्म बनाया है। वह न केवल एक प्रखर होम्सोपैथिक चिकित्सक हैं, बल्कि करुणा और संवेदनशीलता के जीवंत प्रतीक भी हैं। त्रिखा



मैडिकल मिशन के माध्यम से उन्होंने समाज के वंचित और उपेक्षित वर्गों के लिए जो कार्य किए हैं, वे आज के समय में अनुकरणीय हैं। डॉ. त्रिखा का स्वभाव ऐसा है कि वे पहली ही मुलाकात में किसी को भी अपना बना लेते हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका योगदान, विशेष रूप से हरियाणा साहित्य अकादमी के माध्यम से किए गए नवाचारी कार्य, उन्हें एक कुशल नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित करते हैं। पुस्तक की विषय-सूची ही इसकी व्यापकता की गवाही देती है। इसमें डॉ. सुमन सेनी, डॉ. मोहित गुप्ता, डॉ. पवन कुमार शर्मा और उमा शर्मा जैसे अनेक लेखकों के लेख संकलित हैं, जो डॉ. त्रिखा के जीवन के विभिन्न पड़ावों, अविरोध की मिट्टी से जुड़ाव, चंडीगढ़ में उनकी सक्रियता और दिल्ली के साहित्यिक गलियारों में उनकी उपस्थिति- पर प्रकाश डालते हैं। प्रत्येक लेखक ने उन्हें अलग-अलग उपमाओं से नवाजा है, जैसे अगाध ज्ञान की रोशनी गुफा, सृजनशील संत, और असाधारण व्यक्तित्व। पुस्तक के पिछले आवरण पर दिए गए उद्धरण इस कृति के सार को और स्पष्ट करते हैं। निष्कर्षतः 'सृजन के शिखर' डॉ. चंद्र त्रिखा के विराट व्यक्तित्व को समझने का एक सशक्त माध्यम है। यह पुस्तक दर्शाती है कि कैसे एक व्यक्ति अपने भीतर एक चिकित्सक, संपादक, कवि, प्रशासक और सबसे महत्वपूर्ण एक नेक इंसान को एक साथ जीवित रख सकता है। यह कृति पाठकों को सेवा, करुणा और निरंतर कर्मठता की प्रेरणा देती है। यह केवल एक व्यक्ति की जीवनी नहीं है, बल्कि मानवता के प्रति अटूट विश्वास की एक जीवंत गाथा है जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य करेगी।

कुछ हटकर

एआई से घबराएं नहीं करियर में बनाएं ताकत

सेंट्रल डेस्क

कहां से करें पढ़ाई

कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई अब केवल कंप्यूटर की दुनिया तक सीमित नहीं रह गई है। पढ़ाई से लेकर बैंकिंग, चिकित्सा, कृषि, मीडिया और कारोबार तक इसका इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में विद्यार्थियों के सामने करियर को लेकर एक नया सवाल खड़ा हो गया है कि एआई के दौर में किस क्षेत्र को चुना जाए। विशेषज्ञों के मुताबिक हर छात्र के लिए एआई इंजीनियर बनना जरूरी नहीं है। जरूरत इस बात की है कि विद्यार्थी अपने पर्सनल क्षेत्र की विशेषज्ञता के साथ एआई का इस्तेमाल करना सीखें। आने वाले समय में तकनीकों की समझ रखने वाले डॉक्टर, शिक्षक, वकील, पत्रकार, कृषि विशेषज्ञ और वित्त विशेषज्ञों के लिए भी नए अवसर पैदा हो सकते हैं। ऐसे में 10वीं और 12वीं के बाद विषय चुनने से लेकर उच्च शिक्षा और नौकरी तक विद्यार्थियों को बदलती जरूरतों को

- एनआईईएलआईटी : एआई, मशीन लर्निंग, डेटा साइंस और कंप्यूटर से जुड़े पाठ्यक्रम।
- स्वयं-एनपीटीईएल : आईआईटी और अन्य संस्थानों के ऑनलाइन पाठ्यक्रम।
- आईआईटी के एआई और डेटा साइंस : बीटैक, एमटेक और शोध के लिए बेहतर विकल्प।
- विश्वविद्यालय और निजी संस्थान : एआई, मशीन लर्निंग और डेटा साइंस में स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम।
- ऑनलाइन पाठ्यक्रम : कॉलेज की पढ़ाई के साथ एआई के छोटे प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम किए जा सकते हैं।

ध्यान में रखना होगा। सही पाठ्यक्रम, जरूरी कौशल और व्यावहारिक अनुभव के साथ एआई को करियर की चुनौती नहीं, बल्कि नई संभावना बनाया जा सकता है।



कौन-सा रास्ता चुनें

- गणित और कंप्यूटर में रुचि : बीटक कंप्यूटर साइंस/एआई-एमएल
- आंकड़ों में रुचि : डेटा साइंस/सांख्यिकी
- कृषि में रुचि : कृषि की पढ़ाई/एआई व डेटा कौशल
- मीडिया पसंद है : पत्रकारिता + एआई व डेटा विश्लेषण

प्रमुख करियर विकल्प

- एआई एवं मशीन लर्निंग : एआई इंजीनियर, मशीन लर्निंग इंजीनियर, एआई शोधकर्ता
- डेटा साइंस : डेटा वैज्ञानिक, डेटा विश्लेषक, बिजनेस विश्लेषक
- साइबर सुरक्षा : साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ, सुरक्षा विश्लेषक-रोबोटिक्स : रोबोटिक्स इंजीनियर, स्वचालन विशेषज्ञ
- स्वास्थ्य तकनीक : चिकित्सा आंकड़ा विश्लेषण, स्वास्थ्य तकनीक
- कृषि तकनीक : फसल, मौसम और मिट्टी के आंकड़ों का विश्लेषण
- बैंकिंग एवं वित्त : जोखिम विश्लेषण, धोखाधड़ी पहचान, वित्तीय आंकड़ा विश्लेषण

शुरुआती वेतन कितना

- एआई/मशीन लर्निंग : लगभग 5-12 लाख रुपये सालाना
 - डेटा साइंस : लगभग 4-10 लाख रुपये सालाना
 - साइबर सुरक्षा : लगभग 4-8 लाख रुपये सालाना
 - बैंकिंग/वित्त : लगभग 4-9 लाख रुपये सालाना
 - स्वास्थ्य तकनीक : लगभग 4-9 लाख रुपये सालाना-कृषि तकनीक : लगभग 3.5-8 लाख रुपये सालाना
 - मीडिया/डिजिटल क्षेत्र : लगभग 3-7 लाख रुपये सालाना
- नोट : वेतन कंपनी, शहर, संस्थान, कौशल और अनुभव के अनुसार काफी अलग हो सकता है।

85 शिक्षकों को किया सम्मानित, बाल विवाह रोकथाम को लेकर भी हुई चर्चा

शिक्षक होते हैं राष्ट्र के निर्माता: सीजेएम

जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रन की सहयोगी संस्था एमडीडी ऑफ इंडिया ने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के संयुक्त तत्वावधान में करवाया समारोह

हरिभूमि न्यूज ► झज्जर

शिक्षक दिवस के अवसर पर जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रन की सहयोगी संस्था एमडीडी ऑफ इंडिया ने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के संयुक्त तत्वावधान में एडीआर सेंटर में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम में जिले के विभिन्न विद्यालयों से पहुंचे 85 शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के



झज्जर। डॉक्टर पवन देशवाल को सम्मानित करते हुए सीजेएम विशाल एवं अन्य।

फोटो: हरिभूमि

सचिव एवं सीजेएम विशाल ने बतौर शिक्षक राष्ट्र के निर्माता होते हैं और उन्हें देश के निर्माण में निरंतर योगदान देना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र एवं पौधा देकर सम्मानित किया

कि शिक्षक राष्ट्र के निर्माता होते हैं और उन्हें देश के निर्माण में निरंतर योगदान देना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र एवं पौधा देकर सम्मानित किया

और विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने का आह्वान किया।

गुड टच-बैड के बारे में बताया

एमडीडी ऑफ इंडिया के जिला समन्वयक मनोज कुमार ने शिक्षकों के साथ बाल विवाह रोकथाम में उनकी भूमिका को लेकर चर्चा करते हुए कहा कि बाल विवाह बच्चों के अधिकारों का हनन है, इसलिए इसके खिलाफ सामूहिक प्रयास जरूरी हैं। इसके अलावा जिला आयुर्वेदिक अधिकारी पवन देशवाल ने शिक्षकों को स्वस्थ रहने के लिए पौष्टिक आहार अपनाने, आर्ट ऑफ लिविंग के राजवीर यादव ने मेंडिटेशन के लाभ, लीगल एंड डिफेंस काउंसिल दीपक गहलोत ने राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण की शिक्षा संबंधी योजना की जानकारी दी तथा बच्चों को गुड टच-बैड टच बारे जागरूक करने पर जोर दिया।



सुशीला को मिला गांधी सेवा रत्न अवॉर्ड

बहादुरगढ़। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए आदर्श समाज समिति इंडिया द्वारा शिक्षाविद और साहित्यकार सुशीला शील स्वयंसिद्धा को श्री बजरंग लाल गांधी स्मृति दिवस पर गांधी सेवा रत्न अवॉर्ड प्रदान किया गया। सुशीला शील स्वयंसिद्धा ने 25 वर्षों तक दिल्ली, मुंबई, गुरुग्राम, केरल, फतेहपुर शेखावाटी व पिलानी

राजस्थान के प्रतिष्ठित विद्यालयों में शिक्षण क्षेत्र में अनेक नवाचार कर विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया। वे तोहाना और नागौर के स्कूलों में प्रधानाचार्य के रूप में सेवाएं दे चुकी हैं। उनके द्वारा रचित दोहा संग्रह को वर्ष 2017 का राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त प्रशस्ति सम्मान एवं भारतेन्दु हरिश्चंद्र साहित्य श्री सम्मान मिल चुका है।

सुनील को मिला स्टेट टीचर अवॉर्ड

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने किया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ► बहादुरगढ़

शहर के सेक्टर-2 निवासी सुनील कुमार को दिल्ली शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रतिष्ठित राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। दिल्ली के त्यागराज स्टेडियम में हुए समारोह में दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शिक्षा मंत्री आशीष सूद व सांसद बांसुरी स्वराज की उपस्थिति में सुनील को यह सम्मान दिया। बता दें कि सुनील कुमार टीकरी कलां राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय में टीजीटी हिंदी के पद पर



कार्यरत हैं। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में समर्पण, नवाचारपूर्ण शिक्षण पद्धतियों और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है। सुनील कुमार विद्यार्थियों को सांस्कृतिक, सामाजिक, पर्यावरणीय एवं रचनात्मक गतिविधियों से भी

जोड़ते हैं। वे सामाजिक सुधार, पर्यावरण संरक्षण तथा बेघर एवं बेसहारा जीवों की सेवा के लिए भी सक्रिय रूप से कार्य करते हैं। स्टेट टीचर अवॉर्ड से सम्मानित होने पर सेक्टर-2 में खुशी एवं गर्व का माहौल है। क्षेत्रवासियों ने सुनील कुमार को इस उपलब्धि पर बधाई दी।

■ महान शिक्षाविद एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में करवाया कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज ► झज्जर

आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दादनपुर में शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजन किया गया। महान शिक्षाविद एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर शिक्षकों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त की। प्राचार्य गौरव ठाकुर ने डॉक्टर राधाकृष्णन के जीवन पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा के साथ समाजहित में कार्य



करने और अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से निर्वहन करने का संदेश दिया। विद्यार्थियों ने समूहगान, भाषण, कविता, नृत्य और अभिनय के माध्यम से गुरु की महिमा का गुणगान किया।

बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने अपने चहेते शिक्षकों की भूमिका निभाते हुए विभिन्न कक्षाओं में शिक्षण कार्य किया और शिक्षकों को आकर्षक टाइटल देकर सम्मानित किया। वहीं विद्यार्थियों

ने अध्यापकों के लिए विभिन्न मनोरंजक खेलों और गतिविधियों का आयोजन किया। विद्यालय निदेशक अमित गहलावत ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है और समाज को सही दिशा देने के

साथ आने वाली पीढ़ी का भविष्य संवारता है। निदेशिका सीजू गहलावत ने कहा कि शिक्षक विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ संस्कार, अनुशासन और आत्मविश्वास का विकास करते हैं।

बैटक में हस्तशिल्प के उत्थान को लेकर मंथन



बहादुरगढ़। बैटक के बाद अधिकारियों के साथ नेशनल अवार्ड चंद्रकांत बोंदवाल।

हरिभूमि न्यूज ► बहादुरगढ़

नेशनल अवार्ड चंद्रकांत बोंदवाल ने हस्तशिल्प कला के उत्थान को लेकर हुई टेक्सटाइल मिनिस्ट्री द्वारा आयोजित उत्तर क्षेत्र की विशेष बैठक में शिरकत की। दिल्ली के राजीव गांधी भवन में वरुण मंत्रालय द्वारा उत्तरी क्षेत्र की एक उच्च स्तरीय

प्रदेश में 4500 स्कूल बंद, शिक्षक पढ़ाने से ज्यादा सरकारी इयूटी में व्यस्त, पढ़ाई प्रभावित

■ शिक्षाविदों के मंथन में सरकारी स्कूलों की घटती संख्या पर चिंता

■ एसआईआर, चुनाव और जनगणना की इयूटी से पढ़ाई प्रभावित होने की बात कही

हरिभूमि न्यूज ► रोहतक

हरियाणा में सरकारी स्कूलों की संख्या लगातार घट रही है। पिछले कुछ वर्षों में करीब 4500 सरकारी स्कूल बंद हो चुके हैं। इसके साथ ही स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों पर पढ़ाई के अलावा चुनाव, जनगणना और एसआईआर जैसी सरकारी इयूटियों का बोझ भी बढ़ता जा रहा है। ऐसे में सरकारी स्कूलों में शिक्षा व्यवस्था को लेकर सवाल उठ रहे हैं। रविचार को तिलक नगर धर्मशाला में हरियाणा ज्ञान-विज्ञान समिति की ओर से आयोजित



शिक्षक सम्मान समारोह में शिक्षाविदों और शिक्षकों के बीच शिक्षा व्यवस्था को लेकर मंथन हुआ। समिति के प्रदेश अध्यक्ष प्रो. प्रमोद गौरी ने कहा कि शिक्षक का मुख्य काम विद्यार्थियों को पढ़ाना है, लेकिन वर्तमान में उन्हें लगातार गैर-शैक्षणिक कार्यों में लगाया जा रहा है। इसका सीधा असर शिक्षण कार्य पर पड़ता है। उन्होंने कहा कि एक तरफ सरकारी स्कूल बंद किए जा रहे हैं और दूसरी तरफ बड़े हुए स्कूलों के शिक्षकों की जिम्मेदारियां बढ़ाई जा रही हैं। एसआईआर,

जनगणना और चुनाव जैसी इयूटियों में शिक्षकों की तैनाती से उनका काफी समय शिक्षण कार्य से बाहर चला जाता है।

प्रो. गौरी ने कहा कि सरकारी स्कूल केवल पढ़ाई के केंद्र नहीं रहे, बल्कि समाज के विकास की महत्वपूर्ण कड़ी रहे हैं। आजादी के आंदोलन के दौरान स्कूलों के निर्माण में समाज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ऐसे में स्कूलों का बंद होना केवल सरकारी संस्थानों की संख्या कम होने का मामला नहीं है, बल्कि बच्चों के लिए

किया जा रहा जागरूक

समिति के रोहतक अध्यक्ष हजीनियर लाम सिंह हुड्डा ने बताया कि हरियाणा ज्ञान-विज्ञान समिति पिछले 30 वर्षों से शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय और वैज्ञानिक चेतना के क्षेत्र में काम कर रही है। वर्तमान में प्रदेश के 12 जिलों में सामाजिक जागरूकता और समाज सुधार के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

शिक्षा के अवसर सीमित होने का भी सवाल है। उन्होंने पूरे देश में करीब एक लाख स्कूल बंद होने की बात सामने आने का उल्लेख करते हुए शिक्षा व्यवस्था पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत बताई। निजी स्कूलों के शिक्षकों की स्थिति पर भी चिंता जताई गई। प्रो. गौरी ने कहा कि कई निजी शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों को उनकी मेहनत और जिम्मेदारी के अनुरूप वेतन नहीं मिल रहा है। ऐसे में सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में शिक्षकों की स्थिति सुधारना जरूरी है।

हरिभूमि न्यूज ► कलानौर

नारनौल-अंबाला 152डी हाइवे पर स्कूटी और पिकअप में हुई टक्कर

नारनौल-अंबाला 152डी हाइवे पर स्कूटी और पिकअप की टक्कर में स्कूटी सवार व्यक्ति की मौत हो गई। सूचना पाकर कलानौर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू की। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के डेड हाउस भेज दिया। पुलिस मामले में जांच कर रही है।

इयूटी के निकला था कृष्ण

मृतक की पहचान गांव बोहर पाना भोपाना निवासी कृष्ण के रूप में हुई। कृष्ण सिक्कोरिटी गार्ड की नौकरी करता था। सुबह स्कूटी लेकर इयूटी पर जाने के लिए घर से निकला था। जब कृष्ण नारनौल-अंबाला हाईवे 152 डी पर पहुंचा तो तेज रफ्तार पिकअप ने स्कूटी में टक्कर मार दी, जिसके कारण कृष्ण की मौत हो गई। मृतक के बेटे राकेश ने बताया कि उसके पिता कृष्ण रोजाना की तरह सुबह 4 बजे घर से इयूटी करने के

लिए घर से निकले थे। लेकिन किसे पता था कि वह वापस नहीं लौटेंगे। उसे पुलिस ने सूचना दी थी कि उसके पिता का एक्सीडेंट हो गया, जिसके बाद वह मौके पर पहुंचे और देखा कि उसके पिता की मौत हो चुकी है।

कलानौर थाना इंचार्ज रविंद्र कुमार ने बताया कि 152डी पर सड़क हादसे में एक व्यक्ति की मौत होने की सूचना मिली थी। सूचना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू की। पुलिस ने शव का पोस्टमॉर्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया। साथ ही मृतक के बेटे की शिकायत पर पिकअप ड्राइवर के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू की।

माजरा गांव में बाबा मोहन दास पुस्तकालय एवं वाचनालय का हुआ शुभारंभ

पुस्तकालय केवल किताबें पढ़ने का स्थान नहीं, बल्कि युवाओं के भविष्य को गढ़ने का साधना स्थल: कुलताज

■ बीईओ शिव नारायण शास्त्री और प्रोफेसर डॉ. दयानंद ने भी पुस्तकालय की उपयोगिता पर प्रकाश डाला

हरिभूमि न्यूज ► बेरी

माजरा गांव स्थित बाबा मोहन दास पुस्तकालय एवं वाचनालय के शुभारंभ अवसर पर आयोजित समारोह में शिक्षाविदों, अध्यापकों, समाजसेवियों और युवाओं ने पुस्तकालय को ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए नई उम्मीद बताया।

एमडीयू के खेल निदेशक प्रोफेसर कुलताज सिंह ने कहा कि पुस्तकालय केवल किताबें पढ़ने का स्थान नहीं, बल्कि युवाओं के भविष्य को गढ़ने का साधना स्थल है। नियमित स्वाध्याय से विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं की बाधाओं को



बेरी। कार्यक्रम के दौरान मुख्यातिथि को पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत करते हुए आयोजक समिति सदस्य।

फोटो: हरिभूमि

पार कर रोजगार और बेहतर कैरियर की ओर बढ़ सकते हैं। उन्होंने कहा कि पुस्तकालय में विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए बेहतर वातावरण मिलेगा और यह आसपास के गांवों

के युवाओं के लिए भी कैरियर निर्माण का महत्वपूर्ण केंद्र साबित होगा। उन्होंने पढ़ाई के साथ खेल व योग को दिनचर्या में शामिल करने का आह्वान किया। सेवाविभूत

बीईओ शिव नारायण शास्त्री और संस्कारम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉक्टर दयानंद कादियान ने भी पुस्तकालय की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। पूर्व जिला पार्षद

मास्टर जय भगवान ने बताया कि विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए आधुनिक तकनीकी सुविधाएं और विशेषज्ञों के व्याख्यान उपलब्ध करवाए जाएंगे। इस दौरान आयोजित प्रतियोगी परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले दिशा, पूजा, नैसी, रितिका, सपना, प्रदीप, राहुल, आयुष, हर्ष, विनोद, प्रिंस व सीरभ आदि विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया गया। पुस्तकालय संचालक महंत छतर ने युवाओं की निस्वार्थ सेवा जारी रखने का संकल्प व्यक्त किया। इस मौके पर धर्मवीर सिंह, राजेश कुमार, अलका कुमारी, संतोष कुमारी, राजकुमार, सुरेंद्र सिंह, राजीव कुमार, अतर सिंह, अनूप सिंह, दलवीर सिंह, राजवीर सिंह, जयवीर सिंह सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

■ धारौली में भारत-पाक युद्ध में शहीद लांस नायक की स्मृति में रक्तदान शिविर लगाया

हरिभूमि न्यूज ► झज्जर

क्षेत्र के गांव धारौली में सामाजिक संस्था मां-मातृभूमि सेवा समिति की ओर से 1965 भारत-पाक युद्ध में शहीद लांस नायक हवा सिंह लांबा की स्मृति में 11वें विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिला रेडक्रॉस सोसाइटी के सहयोग से शहीद हवा सिंह लांबा राजकीय माध्यमिक विद्यालय में आयोजित इस शिविर में एक महिला सहित 86 युवाओं ने रक्तदान किया।

पौधे भेंट किए

नागरिक अस्पताल की ब्लड बैंक टीम सदस्य डॉक्टर प्रमोद व नर्सिंग ऑफिसर ममता के नेतृत्व में अशोक काउंसलर, मीनाक्षी व प्रीति लैब टेक्नीशियन द्वारा रक्त संग्रह का कार्य किया गया। समिति अध्यक्ष



झज्जर। शिविर में रक्तदान करते हुए युवा एवं उनका उत्साह बढ़ाते हुए अतिथि।

युद्धवीर सिंह लांबा ने बताया कि शिविर की अध्यक्षता डॉक्टर संदीप गुलिया ने की जबकि अश्वनी मल्हान ने मुख्यातिथि तथा प्रमोद जांगड़ा व पवन जाखड़ ने विशेष अतिथि के रूप में शिरकत की। समिति पदाधिकारियों ने बताया कि शिविर के आयोजन में विभिन्न शिक्षाविदों,

समाजसेवियों व संस्थाओं ने सहयोग दिया। पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पहले 60 रक्तदाताओं को एक-एक इंडोर पौधा भेंट किया गया। इस मौके पर नितेश भोरिया, डॉक्टर सोनु, रिकू लांबा, मास्टर धर्मवीर, सुखवीर जाखड़ सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

सभी मांगों पूरी नहीं की जाती, तब तक जारी रहेगा धरना-प्रदर्शन

सफाई कर्मचारियों ने तीन दिन और बढ़ाई हड़ताल की अवधि, दिनभर की नारेबाजी

सफाई कर्मचारियों ने कहा कि अगर सरकार जल्द उनकी मांगों को पूरा नहीं करती है तो आंदोलन तेज किया जाएगा

हरिभूमि न्यूज़ ► झज्जर

पिछले 32 दिनों से हड़ताल पर बैठे नगर परिषद के सफाई कर्मचारियों ने हड़ताल की अवधि को आगामी तीन दिनों के लिए बढ़ा दिया है। कर्मचारियों का कहना है कि जब तक उनकी सभी मांगें पूरी नहीं की जाती, तब तक धरना प्रदर्शन जारी रहेगा। यूनियन के इकाई प्रधान शिवम चावरिया ने कहा कि उनकी प्रमुख मांगों में बीती 13 मई को संघ व सरकार के बीच हुए समझौते को लागू करना, फरीदाबाद अग्निकांड में काल का ग्रास बने कर्मचारियों के परिवार को एक-एक करोड़ रुपए मुआवजा व सरकारी नौकरी, पैरोल के सफाई कर्मचारी व सीवरमैनों को पक्का करना, वर्ष 2014 में जिले में हटाए हुए 60 कर्मचारियों को ड्यूटी पर वापस लेने, ड्यूटी के दौरान मृत्यु होने पर सफाई कर्मचारियों को 20 लाख रुपये की आर्थिक सहायता, ठेका प्रथा बंद करना, सेवानिवृत्त पर कर्मचारियों को 10 लाख रुपये की आर्थिक मदद, सभी पैरोल फायरमैन व चालकों को नियमित करना, जोखिम भत्ता पांच हजार रुपये करना, एचकेआरएनएल व विभिन्न ठेकों में लगे तृतीय व चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को नीति बनाकर पक्का करना तथा पक्का करने तक तीस हजार रुपये वेतन, एचकेआरएनएल सफाई कर्मचारियों को पैरोल पर लिए जाने की मांग शामिल है। उन्होंने कहा कि अगर सरकार जल्द उनकी मांगों को पूरा नहीं करती है तो आंदोलन तेज किया जाएगा।



झज्जर। नगर परिषद परिसर में धरनारत कर्मचारी नारेबाजी करते हुए।

फोटो: हरिभूमि

अब ग्रामीण सफाई कर्मचारी भी उतरेंगे सड़कों पर

झज्जर। सरकार पर वायदा खिलाफी का आरोप लगाते हुए ग्रामीण सफाई कर्मचारी यूनियन हरियाणा ने आंदोलन तेज करने का निर्णय लिया है। ग्रामीण सफाई कर्मचारी यूनियन के जिला सचिव संदीप कुमार ने बताया कि राज्य प्रधान बसाऊराम की अध्यक्षता में रविवार को हुई वरुंअल बैठक में 11 से 13 सितंबर तक पंचायत मंत्रों के आवास पर राज्य स्तरीय पड़व डालने का फैसला लिया गया। यूनियन नेता बसाऊराम, महासचिव विनोद कुमार, कोषाध्यक्ष संदीप कुमार, उपमहासचिव देवीराम व वरिष्ठ उपाध्यक्ष जोगिंदर सिंह ने बताया कि 29 मई को सरकार के साथ 18 में से 17 मांगों पर सहमति बनी थी और 30 जून तक पत्र जारी करने का आश्वासन दिया गया था। आरोप है कि सरकार ने केवल 21से रुपये वेतन बढ़ोतरी का पत्र जारी किया, जबकि अन्य मांगों पर सहमति के बावजूद अब तक पत्र जारी नहीं किए गए। उन्होंने कहा कि 14 सितंबर को मतलौडा गांव से कुरुक्षेत्र और 15 सितंबर को कैथल से कुरुक्षेत्र तक पदयात्रा निकाली जाएगी। इसके बाद 20 सितंबर को कुरुक्षेत्र में मुख्यमंत्री आवास पर राज्य स्तरीय आक्रोश प्रदर्शन किया जाएगा। नेताओं ने चेतावनी दी कि मांगें लागू नहीं होने पर आंदोलन और तेज किया जाएगा।



हड़ताली सफाईकर्मियों ने मांगा शहरवासियों का समर्थन

हरिभूमि न्यूज़. बहादुरगढ़

सफाई कर्मचारियों की हड़ताल अब दूसरे महीने में प्रवेश कर गई है। प्रशासन द्वारा कर्मचारियों को ड्यूटी पर लौटने के लिए दिए गए नोटिस की मियाद शनिवार को पूरी हो गई है। यूनियन ने इसे उत्पीड़न बताया और कहा कि सरकार को बातचीत के जरिए विवाद सुलझाना चाहिए। कर्मचारी नेताओं ने हरियाणा सरकार पर स्वीकृत मांगों की संख्या को लेकर विरोधाभासी आंकड़े देने का आरोप लगाया।

रविवार को हड़ताली सफाईकर्मियों ने नगर परिषद के गेट से प्रदर्शन शुरू किया और शहरवासियों से समर्थन की अपील की। उनका कारवां रोहतक रोड, रेलवे रोड और नाहरा नाहरी रोड होते हुए वापिस नगर परिषद पहुंचा। बता दें कि 13 मई को सफाई कर्मचारी और अग्निशमन विभाग के समझौते को लागू करने समेत अन्य मांगों पर



बहादुरगढ़। शहर के रेलवे रोड पर प्रदर्शन करते सफाईकर्मों।

फोटो: हरिभूमि

6 अगस्त को हड़ताल शुरू हुई थी। इसके बाद से ही लगातार बढ़ने के कारण बीते एक महीने से भी अधिक समयावधि से यह हड़ताल जारी है।

बहादुरगढ़ इकाई प्रधान राजेश बालगुहरे ने कहा कि हरियाणा सरकार और उसके कर्मचारी और अग्निशमन विभाग के समझौते को लागू करने समेत अन्य मांगों पर

जा रहे सब दावे झूठे हैं। सरकार की ओर से कोई लिखित अधिसूचना या पत्र जारी नहीं किया गया है। सचिव अमित ने मंच संचालन किया।

इस मौके पर जिला प्रधान राजेंद्र तूषामड, मुकेश बालगुहरे, लीला राम, अजय, ऊषा देवी, होशियार सिंह, सुनील, सरोज, संदीप टॉक, इंद्रमल, जयभगवान,

सुनीता, सोनू, नंदराम दरोगा, कुलदीप दरोगा, भीम सिंह, बिट्टू, प्रीतम, मंजीत, विक्रान्त, अमन, कांता, प्रेमिला, अनोता के साथ मोनू, विजय, सचिन, सागर, अजय, संदीप, कुलदीप, अनिल, सन्नी, प्रवीण, पवन, रणजीत, प्रहलाद, जयभगवान, करण, सूरजमल, दीपू व सुमेर आदि प्रदर्शन में शामिल रहे।

कुलताना में 200 का स्वास्थ्य जांचा रॉयल ग्रीन रियलिटी को मिले दो प्रतिष्ठित अवॉर्ड

बहादुरगढ़। गांव कुलताना में सांपला के श्रीधराम अस्पताल की ओर से नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। इसमें करीब 200 ग्रामीणों ने स्वास्थ्य जांच एवं चिकित्सकीय परामर्श का लाभ उठाया। शिविर में हड्डियों, जोड़ों एवं रीढ़ से संबंधित समस्याओं से पीड़ित मरीजों की संख्या अधिक रही। ऑर्थोपेडिक एवं स्पाइन सर्जन डॉ. मोहित दांडा ने मरीजों की जांच कर उनकी समस्याओं के अनुसार उपचार संबंधी विशेषज्ञ सलाह दी। डॉ. शीतल एवं डॉ. शुभम सहरावत ने भी शिविर में अपनी सेवाएं दीं। शिविर के दौरान बीपी और शुगर की नि:शुल्क जांच की गई तथा जरूरतमंद मरीजों को नि:शुल्क दवाइयां भी उपलब्ध कराई गईं। डॉ. मोहित दांडा ने कहा कि घुटनों, जोड़ों, कमर या रीढ़ में लगातार रहने वाले दर्द को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। समय पर चिकित्सकीय जांच और उचित उपचार से कई समस्याओं को गंभीर होने से रोका जा सकता है।



बहादुरगढ़। शिविर में ग्रामीणों की जांच करते स्वास्थ्यकर्मी।

हरिभूमि न्यूज़ ► बहादुरगढ़

नई दिल्ली में हुए रियल्टी एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कॉन्क्लेव में रॉयल ग्रीन रियलिटी को दो प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। कॉन्क्लेव में रॉयल ग्रीन रियलिटी के एमडी यशोक वासन और डायरेक्टर वरुण कुमार मखीजा को विजनीर लीडर इन रियल एस्टेट अवॉर्ड प्रदान किया गया। जबकि रॉयल ग्रीन काउंटी सोनीपत को नॉन-मेट्रो श्रेणी में एक्सीलेंस इन इंटीग्रेटेड टाउनशिप डेवलपमेंट अवॉर्ड से नवाजा गया।

यशोक वासन ने कहा कि एक ही मंच पर



दो प्रतिष्ठित पुरस्कार मिलना रॉयल ग्रीन रियलिटी के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

बहादुरगढ़। कॉन्क्लेव में अवॉर्ड लेते रॉयल ग्रीन रियलिटी के एमडी यशोक वासन।

फोटो: हरिभूमि

उन्होंने कहा कि रियल एस्टेट अब केवल मकान या जमीन उपलब्ध कराने तक सीमित

नहीं रहा, बल्कि यह लोगों के जीवन की गुणवत्ता और शहरों के भविष्य को आकार देने वाला महत्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है। वरुण मखीजा ने कहा कि रॉयल ग्रीन रियलिटी भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए अपनी परियोजनाओं और विकास योजनाओं को आकार दे रही है। कंपनी आधुनिक सुविधाओं, बेहतर प्लानिंग, हरित वातावरण और गुणवत्तापूर्ण जीवनशैली का संतुलन बनाने में जुटी है। इनोवेशन, क्वालिटी, ग्राहक विश्वास और सुनिश्चित शहरी विकास के क्षेत्र में कंपनी के प्रयासों को मिले ये पुरस्कार रियल एस्टेट उद्योग में उसकी बढ़ती पहचान को दर्शाते हैं।

पत्रकार रमेश राजपूत की पत्नी का निधन

हरिभूमि न्यूज़ ► बहादुरगढ़

अस्वस्थ चल रही थीं। वे अपने पीछे दो पुत्र, एक पुत्री, पौत्र-पौत्री सहित

लाइनपार निवासी वरिष्ठ पत्रकार रमेश राजपूत की पत्नी आशा राजपूत का शनिवार को निधन हो गया। रविवार को उनका अंतिम संस्कार किया गया। करीब 62 वर्षीय आशा राजपूत गत 3-4 वर्षों से



श्रद्धांजलि अर्पित की।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, गणपति ट्रेल्स के ऊपर, नजदीक टैक्सि स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 829545800, 8295738500, 8614993942, 8295457800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है

मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश

आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन **हरिभूमि** के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 × 8 से.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	₹. 2500/- ₹. 3000/-

+5% GST Extra

नोट : विशेष छूट राशि केवल उपर्युक्त टाईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कोई रेट लागू।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400

बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रेल्स के ऊपर, 8295852900

पीटीएम में हुई विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति को लेकर चर्चा

हरिभूमि न्यूज़ ► झज्जर

एल सीनियर सैकेंडरी स्कूल में परियोजीक टेस्ट परिणाम को लेकर कक्षा प्री - नर्सरी से कक्षा बहावी कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए पीटीएम का आयोजन किया गया। प्राचार्या निधि कादियान ने बताया कि मीटिंग में बच्चों के सर्वांगीण विकास को लेकर अभिभावकों ने आवश्यक सुझाव दिए गए जिन्हें शिक्षकों द्वारा नोट कर लिया गया।

स्कूल प्रबंधक केएम डागर ने कहा कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए इस प्रकार की बैठकों का आयोजन आवश्यक है। इस दौरान स्कूल डायरेक्टर जगपाल गुलिया, जयदेव दहिया, अनिता

झज्जर। बच्चों की शैक्षणिक प्रगति का जायजा लेते हुए अभिभावक।

गुलिया, नीलम दहिया, योजित गुलिया, भविष्य दहिया ने मीटिंग में उपस्थित होने के लिए अभिभावकों का आभार जताया।

मौके पर रविंद्र लोहचब, पूजा कादियान, अमित लोहचब, विशाल कुमार, रितिका, मुकेश शर्मा आदि उपस्थित रहे।

नगर परिषद ने यूनियन से जुड़े 20 सफाई कर्मियों को नोटिस सौंपे

बहादुरगढ़। नगर परिषद ने 20 पालिका रोल सफाई कर्मचारियों को ड्यूटी ज्वाइन करने के निर्देश जारी किए हैं। इन कर्मचारियों के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज होने का उल्लेख भी किया गया है। इनको 7 सितंबर तक ड्यूटी ज्वाइन करने के संबंध में नोटिस जारी किए गए हैं, लेकिन इन सभी 20 कर्मचारियों ने नोटिस लेने से इनकार कर दिया। इसके बाद नोटिस उन्हें व्हाट्सएप के माध्यम से भेजे गए और मौखिक रूप से भी सूचित किया गया। नगर परिषद ने यूनियन से जुड़े हुए राजेश, सुनील, संदीप, राजपाल, संदीप, अमित, सरोज, कुलदीप, सुभाष, दलबीर, धर्मबीर, सत्यवान, वजीर, मीना, सुषमा, प्रेमिला, राकेश, लीलाराम, अमित और राजेंद्र को नोटिस जारी किए हैं। नगर परिषद के कार्यकारी अधिकारी संजय रोहिल्ला ने बताया कि हरियाणा सरकार के शहरी स्थानीय निकाय के आयुक्त एवं सचिव द्वारा 2 सितंबर के पत्र तथा जिला नगर आयुक्त झज्जर के 3 सितंबर के पत्र की अनुपालना में यह कार्रवाई की गई है। इसके तहत 4 सितंबर को हड़ताली पालिका रोल सफाई कर्मचारियों को ड्यूटी ज्वाइन करने के निर्देश देते हुए नोटिस जारी किए गए थे। सोमवार तक यदि संबंधित कर्मचारी ड्यूटी पर उपस्थित नहीं होते हैं अथवा सरकार व विभाग के निर्देशों की अवहेलना करते हैं, तो उनके खिलाफ नियमानुसार आगामी विभागीय एवं अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

बाबा कांशीगिरी महाराज का 80वां वार्षिकोत्सव नौ से

झज्जर। बाबा कांशीगिरी महाराज का 80वां वार्षिकोत्सव आगामी नौ सितंबर से आरंभ होगा। प्रवक्ता ने बताया कि कार्यक्रम का आगाज बुधवार को यज्ञ एवं बाबा कांशीगिरी का चित्रण डंडे के पुष्पाभिषेक से होगा। कार्यक्रम के दूसरे दिन बाबा के प्राचीन डंडे की नगर शोभा यात्रा निकाली जाएगी। तीसरे दिन स्वामी दयानंद सरस्वती श्रद्धालुओं को ज्ञान गंगा में गोता लगावाएंगे। चौथे दिन मंदिर में मंदिर में भजन संस्था होगी जिसमें पानीपत के रवि आहूजा एवं उनकी टीम संगीतमय भजनों की प्रस्तुति देंगे। कार्यक्रम के पांचवें व अंतिम दिन संकीर्तन के बाद बाबा कांशीगिरी की महाआरती के बाद भंडारे में प्रसाद वितरित किया जाएगा।

9वीं गुरुग्राम हाफ मैराथन में दिनेश जांगड़ा ने ओवरऑल प्रथम स्थान हासिल किया

रन फॉर यूनिटी की चार श्रेणियों में बीआरजी के धावक जीते

हरिभूमि न्यूज़ ► बहादुरगढ़

रन फॉर यूनिटी के संदेश के साथ हुई 9वीं गुरुग्राम हाफ मैराथन में बहादुरगढ़ रनर्स ग्रुप के धावकों ने चारों ओपन श्रेणियों में पदक जीते। दिनेश जांगड़ा ने 21 किलोमीटर में ओवरऑल प्रथम स्थान हासिल किया। दस किलोमीटर में राम सागर ओवरऑल प्रथम, 5 किलोमीटर में सोनपाल सिंह ओवरऑल द्वितीय तथा तीन किलोमीटर में तेजस ने ओवरऑल प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आयु वर्ग की विभिन्न श्रेणियों में भी बीआरजी का दबदबा रहा। रोशन लाल ने 10 किलोमीटर 45 प्लस में प्रथम, राजेश कुमार ने 5 किलोमीटर 45 प्लस में प्रथम, लक्ष्मी नारायण ने 60 प्लस में द्वितीय,

गुलाब सिंह ने 21 किलोमीटर 30 प्लस में तृतीय तथा अशोक कुमार ने 60 प्लस में प्रथम स्थान हासिल किया। इकलास ने 21 किलोमीटर में चौथा स्थान तथा सारिका यादव ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

बीआरजी संस्थापक दीपक छिल्लर ने पेसर की जिम्मेदारी निभाई। उनके साथ विजय सिंह को भी स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

दिल्ली के जेएलएन स्टेडियम में हुए

रेडटेप 10के चैलेंज में बीआरजी के 65 धावकों ने भाग लिया। राकेश डबास ने 10 किलोमीटर 45 प्लस आयु वर्ग में तीसरा स्थान हासिल किया। सुनील सिकरी ने 70 वर्ष से अधिक आयु में विशेष उत्साह

बहादुरगढ़। दौड़ पूरी करने के बाद खुशी जताते बीआरजी के विजेता धावक।

फोटो: हरिभूमि

दिखाया। लक्ष्मण, पुष्कर, बनेश, विनीत, डीके शर्मा, रमाकांत, सरनम, संदीप शर्मा, राकेश, विजय वरुण, तेजिंद्र, शमशेर, नवीन राणा, राज कपूर मोर, सोनी कुमारी, सुधीर तेवतिया और सौरभ मलिक ने सफलतापूर्वक दौड़ पूरी की।

राजस्थान के उदयपुर में आयोजित वेदांता जिंक सिटी हाफ मैराथन में बीआरजी के रोहित कुमार ने 21 किलोमीटर हाफ मैराथन महज 1 घंटा 29 मिनट में पूरी करते हुए प्रथम स्थान हासिल किया। संजय दत्त भगत, रवि चंद्र बेलवाल, शिवप्रताप सिंह, मोहित वर्मा और मनोज सिंह बिष्ट ने भी 21 किलोमीटर में सफलतापूर्वक दौड़ पूरी की। वहीं सूरज सिंह बिष्ट ने 10 किलोमीटर की दौड़ सफलतापूर्वक पूरी की।